OM 19 a_Page 1 and 2 14/01/2015 09:46 Page 7

बाबा ने मुझे उड़ता पंछी बनाया

- ब्र.कु. जयंती,यू.के. एंड ओवरसीज़ को-ऑर्डिनेटर

मेरा जन्म सन् 1949 में पूना में एक सम्पन्न धार्मिक परिवार में हुआ। घर में माता-पिता तथा दादी को भक्ति पूजा का शौक था। कभी-कभी मैं भी उनके साथ मंदिर में जाया करती थी। लेकिन अंदर से मेरी इतनी रुचि नहीं थी। माता-पिता के लौकिक व्यापार के कारण हम सभी का लंदन जाना हुआ। लेकिन मैं छुट्टियां मनाने के लिए पूना में आती थी। वहीं से हम बाबा से मिलने आबू जाते थे। 1956 में एक दिन मुरली चलाते समय मुझे देखकर बाबा ने कहा था कि ये बच्ची ईश्वरीय सेवा करेगी, ये तो बहुत अच्छी टीचर बनेगी। फिर तो हम लंदन चले गये।

बाबा की अनोखी पालना

बाबा सन् 1957 से लेकर लंदन में रजनी बहन(लौकिक माँ) को खुद अपने हाथों से मुरलियाँ भेजते थे। अपने हस्ताक्षर से पत्र लिखते थे। फिर बाबा ने टेप से संदेश भेजना भी चालू किया। जो भी छपाई होती थी,

बाबा ज़रूर हमारे पास भेजते थे। जब त्रिमूर्ति, सृष्टि चक्र और कल्प वृक्ष के चित्र तैयार हुए तो बाबा ने चित्रों का सेट गोल्डन बासकेट में भेजा और कहा कि ये लंदन की रानी को सौगात देना और इन चित्रों से विश्व-सेवा करना। लेकिन उस समय विश्व सेवा की रूपरेखा तो नज़र ही नहीं आती थी। फिर भी बाबा ने वर्षों पहले जो बातें कही थीं, उनका साकार स्वरूप आज हम सभी देख ही रहे हैं।

बाबा के प्यार ने मेरा दिल जीत लिया

उन दिनों मुझे लंदन बहुत दूर लगता था। 1959 के मई मास में भारत में आम की सीज़न चल रही थी। तब लंदन में आम की कमी थी। तो बाबा ने 4 आम का पैकेट एयर-मेल से हमारे घर भेजा था। तो उस पैकेट को देखकर मैं और मेरा 6 वर्ष का छोटा भाई एकदम आश्चर्यचकित हुए। हमें लगा कि बाबा हमें कितना याद करते और प्यार भी देते हैं। जो प्यार हमें लौकिक संबंधियों से नहीं मिलता था, वह बाबा ने हमें दिया। सचमुच उस अनोखे प्यार ने मेरा तो दिल ही जीत लिया था।

बाबा से मिलकर मुझे अपनापन महसूस होता था। ऐसा लगता था कि बाबा सब कुछ जानते हैं। बाबा जैसे की मन की बातें पढ़ लेते थे। उस समय बाबा ये नहीं देखते थे कि इन बच्चों में इतना ज्ञान तो नहीं है, फिर भी शुभचिन्तक बनकर हमें सुन्दर राज़युक्त बातें सुनाते थे और हर प्रकार के स्थूल तथा सूक्ष्म खातिरी करते थे। फिर तो हम लंदन चले गए और मैं अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गई।

मैंने अपने जीवन का फैसला किया

जून 1968 में मधुबन में झोपड़ी में बैठे हुए बाबा से मैंने अपने जीवन के फैसले की बात की। तो बाबा ने मुझे पूछा कि बच्ची क्या चाहती हो? तो थोड़े ही शब्दों में मैंने कहा कि बाबा मैं तो ईश्वरीय सेवा में ही अपना जीवन सफल करना चाहती हूँ। तो बाबा ने तुरंत कहा कि बच्ची तो विजयी बनेगी। वह घड़ी तो मेरे जीवन में महत्वशाली घड़ी थी।

बाबा ने मुझे नज़र से निहाल किया

उन्हीं दिनों में हम रात्रि के समय मुरली के बाद बाबा से गुड-नाईट करने जाते थे। बाबा अपनी खटिया पर लेटे हुए थे। हम 10-12 भाई-बहनें दादी जानकी जी सहित बाबा के सामने जाकर खड़े हुए। बाबा के तकिया के बाजू में मोतिया के फूल थे, उसकी बड़ी मीठी खुशबू आ रही थी। तो बाबा ने सभी को दृष्टि दी और मुझे सामने बुलाया। मोतिया के फूल हाथ में देकर बाबा ने मुझे दृष्टि दी। उस दृष्टि से मुझे अनुभव हो रहा था कि बाबा चुम्बक के समान आत्मा को खींचकर बिल्कुल पार ले जा रहे थे जैसे कि एक प्रकाश की दुनिया का अनुभव हो रहा था जिसमें मैं और बाप दोनों ही हैं। कितने समय तक यह सीन चली मुझे भान ही न था। इस अनुभव से तो जैसे मेरा मरजीवा जन्म ही हुआ।

बाबा हमारे साथ खेल खेलते थे

ब्रह्मा बाबा बुज़ुर्ग थे, फिर भी हम बच्चों को खुश करने के लिए चुस्ती से बैडमिंटन का खेल खेलते थे। खेलते समय बाबा लाईट और माईट हाऊस अनुभव होते थे। बाबा ने मुझसे पूछा कि बच्ची जानती हो किसके साथ खेल रही हो, शिव बाबा के साथ खेल रही हो ना? तो न सिर्फ बाबा ने शब्दों से हमें बताया लेकिन प्रैक्टिकल हमें अनुभव कराया। ऐसे ही एक बार मैं बाबा के साथ भोजन कर रही थी, बाबा ने मुझे बहुत देर तक दृष्टि दी। तो वायब्रेशन्स से ऐसा लगता था कि हम किसी साधारण व्यक्ति के साथ नहीं लेकिनपावरफुल अथॉरिटी के साथ हैं।

बाबा के जीवन में संतुलन देखा

बाबा की पावरफुल पर्सनैलिटी होते हुए भी, नम्रभाव और प्रेम-सम्पन्न व्यवहार देखा। वैसे तो संसार में हम देखते हैं कि किसी की अगर पर्सनैलिटी अच्छी होती है तो साथ में रोब ज़रूर होता है। परंतु बाबा के जीवन में यह अनोखा संतुलन था, इसलिए विश्वपिता होते हुए भी यज्ञ की हर छोटी-छोटी बात का ध्यान रखते थे। हरेक बच्चे के लिए हर प्रकार की सुख-सुविधा हो, ऐसा प्रैक्टिकल माता का पार्ट बजाते हुए भी हमने बाबा को देखा।

अव्यक्त बापदादा ने मुझे विदेश सेवा पर भेजा

अव्यक्त बापदादा ने जून 1969 में मुझे कहा कि बच्ची, बाबा तुम्हें लौकिक घर (लंदन) में नहीं भेज रहे हैं लेकिन विशेष सेवार्थ भेज रहे हैं। तुम भले अपने घर में रहो लेकिन मधुबन जैसी दिनचर्या बनाना जिससे आपकी सेफ्टी भी रहेगी और बाबा तुम्हें शक्ति भी देते रहेंगे। बाबा ने मुझे विशेष कहा था कि अमृतवेले भगवान का द्वार वरदान पाने के लिए सदा खुला रहता है, जितना खज़ाना लेना चाहो ले सकती हो। तो लंदन में इतनी सर्दी होते हुए भी मैं और रजनी बहन प्रतिदिन प्रात: योग और मुरली क्लास करते थे जिससे हमारा उमंग-उल्लास सदा बढ़ता ही रहा। बाद में 1971 में वहाँ भारत से कुछ भाई-बहनें सेवार्थ आये थे जिससे धीरे-धीरे सेवा बढ़ती गई। फिर 1974 में दादी जानकी जी का सेवार्थ आना हुआ। दादी जी के आने के बाद तो सेवा वृद्धि को पाती रही और अभी तो बहुत तेज़ी से बाबा की सेवा आगे बढ़ती जा रही है।

बाबा विदेश में फरिश्ता रूप से सेवा कर रहे हैं

ब्रह्मा बाबा अव्यक्त होने के बाद जैसे कि फरिश्ता रूप से विशेष विदेश सेवा कर रहे हैं यह अनुभव कई बार हमें हुआ। साकार बाप तो भारत में रहे लेकिन अव्यक्त बाप तो विश्व की सेवा कर रहे हैं। विदेशी बच्चों को जगाकर पालना भी कर रहे हैं। इससे उनको ऐसा लगता है कि बाप हमारा ही बाप है जो हमें प्यार करते और शक्ति भी देते हैं। कई विदेशियों को विशेष प्रेरणाएं तथा दिव्य अनुभव प्राप्त होते हैं।

बापदादा ने मुझे बहुत मदद की

एक बार करेबियन के बहामास में एक गुरु के आश्रम में बहुत बड़ी कॉन्फ्रेन्स थी, जिसमें हमें निमंत्रण मिला था। भाषण का विषय था ''दो हज़ार सन् के बाद संसार का भविष्य''। तो मैं उस समय लंदन में ही थी। तो मैंने इसका जवाब पूछने के लिए मधुबन में पत्र लिखा। तो बापदादा ने बहुत सुंदर शब्दों में उसका जवाब दिया था कि बच्ची, विनाश के बारे में तो कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं। उन्हें बताओ कि भविष्य में बहुत सुंदर स्वर्णिम दुनिया आ रही है, उसके लिए हमें किस प्रकार की तैयार करनी चाहिए, तो ये सुनकर वो खुश हो जायेंगे। मुझे सेवा करते समय साकार बाबा की बताई हुई बात सदा याद आती है कि मुरली चलाते समय बाबा के सामने एक देश के एक धर्म के लोग होते हुए भी ऐसी बातें सुनाई जो सर्वधर्म और सर्वदेश की आत्माओं के काम की बातें थीं। उससे स्पष्ट होता था कि बीजरूप, ज्ञान सागर बाप बोल रहे हैं। बाबा ने 1967 में मुझे कहा था कि-बच्ची विदेश में जाकर बाबा का ज्ञान सुनाएगी, उन्हों को बताएगी कि विश्व की हिस्ट्री, जॉग्रफी क्या है और जैसे ही वो लोग सुनेंगे तो पूछेंगे कि ये ज्ञान तुमको सिखाने वाला कौन है? और बच्ची कहेगी कि ये ज्ञान बाप भारत देश में आबू पर्वत पर मधुबन में सुना रहा है। तो 1970 से लेकर विदेश में जब भी भाषण करने का मौका मिला तो कई बार इस प्रकार की सीन प्रैक्टिकल में देखी। सचमुच बाबा और मधुबन की याद मुझे सदा लाइट रखती है। सेवाक्षेत्र में बहुत बातें आती हैं। फिर भी स्वयं को डबल लाइट रखकर उड़ता पंछी बन सदा उड़ती रहती हूँ। दूसरी बात, मैं अपनी बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर रखती हूँ जिससे समय प्रति समय स्व-उन्नति के लिए तथा विश्व-सेवा के लिए बाबा की प्रेरणाओं को कैच कर सकूं।

हरदोई-उ.प्र.। 12 दिवसीय 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रमुख वक्ता ब्र.कु. पूनम,सी.एस.,म.प्र. ब्र.कु. रोशनी, सर्व धर्म के प्रमुख समाज सेवी अशोक मिश्र, हाजी डॉ. एन.ए. अन्जारी, सिस्टर अलवेला, वाजबहादुर सिंह, सी.एस.एन. पी.जी. डिग्री कॉलेज के प्राचार्य नरेश शुक्ला तथा अन्य।

घरौंडा। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषयक कार्यक्रम में अनाज मण्डी प्रधान सुखबीर सन्धु को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रेम। साथ हैं ब्र.कु. दयाल, ब्र.कु. सतीश, अभिनेत्री मोनिका पटेल, ब्र.कु. नितिन तथा अन्य।

कोटा-राज.। 'सम्पूर्ण ग्राम विकास मेला' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सरला,राष्ट्रीय संयोजिका,ग्राम विकास प्रभाग,मेहसाना, बाबूलाल वर्मा,राजस्थान राज्य परिवहन मंत्री, ब्र.कु. हेमा तथा अन्य।

नवरंगपुर। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं विधायक भुजबल मांझी, विधायक मनोहर रंधीर, ए.डी.एम. भीममान सेठ, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. नीलम।